चित्र: दिलीप चिंचालकर

उमेश चौहान

मेरे घर के आँगन में चाँदनी का पेड़ लगा है। जुलाई से अक्टूबर के बीच इस पेड़ पर मण्डराती तितली जाने कब पत्तों पर अण्डे दे जाती है। अण्डे हमें दिखाई नहीं देते क्योंकि इतने बड़े पेड़ में उन्हें देख पाना ज़रा मुश्किल होता है। जब इल्ली का मल हरी-हरी गोलियों के रूप में आँगन में पड़ा मिलता है तब अण्डे से निकली इल्ली की खोज शुरू होती है।

मेरे आँगन में पली तितली

मेरा परिवार इल्ली (कैटरपिलर) खोजने में जुट जाता है। इस समय किस डाली पर बैठी होगी, फूल-पत्ती, कली क्या खा रही होगी इसका पता ताज़ा-गिरी हरी-हरी गोलियों से चलता। जहाँ गोली गिरती वहीं ऊपर पेड़ पर इल्ली ढूँढते। आमतौर पर इस इल्ली का पसन्दीदा खाना ताज़ी-नरम पत्तियों की कोंपलें और कलियाँ हैं। लेकिन खिले फूल सामने आ जाएँ तो उससे भी परहेज नहीं है।

चाँदनी के पौधों में फूल गुच्छे में लगते हैं। खिले हुए फूल अगली सुबह अपने आप झड़ जाते हैं। मज़ेदार बात यह है कि फूल के कुछ हिस्से ही झड़ते हैं, बाकी डाली पर लगे रहते हैं। यह इल्ली इन हिस्सों और कोपलों को चट करने के बाद दूसरी डाली की ओर चल पड़ती है। यह क्रम दिन भर चलता रहता है।

8-10 दिनों में यह इल्ली लगभग 12 सेंटीमीटर लम्बी व लगभग 4 सेंटीमीटर व्यास की मोटाई वाली हो जाती है। इल्ली का रंग हल्का हरा होता है। इसके 3 जोड़ी पैर बेर के काँटों की तरह घूमे हुए और नुकीले होते हैं। इनके अलावा 5 जोड़ी चपटी उभरी हुई रचनाएँ होती हैं, जिनकी सहायता से इल्ली पेड़ से चिपककर चलती है या उसे जकड़े रहती है। इल्ली के पीछे वाले भाग में पीले रंग का एक डंक होता है जिससे यह अपनी रक्षा करती है। मुँह से लगभग 2 सेंटीमीटर ऊपर की ओर दो आँखनुमा रचनाएँ होती हैं। खतरे का संकेत मिलते ही इल्ली मुँह वाला भाग इन आँख जैसी रचनाओं तक सिकोड़ लेती है।

पूर्ण विकसित इल्ली का रंग हरे से गहरा कत्थई तथा नीचे पीला होता जाता है। आँखों का रंग बदल जाता है। अब यह इल्ली पेड़ को छोड़कर किसी सुरक्षित जगह पर जाती है। जैसे दीवार का कोना पत्थरों की ओट आदि। यहाँ वह चारों ओर मुँह-सिर घुमाकर तहकीकात करती है कि ऊपरी भाग खुला है या नहीं। जाँच पूरी हो जाने पर इल्ली अपनी लार से अपने चारों ओर मकड़ी की तरह जाला बनाना शुरू करती है। खुद को सुरक्षित रखने का यह एक तरीका है। अब इल्ली सुस्त होने लगती है। यह अपने शरीर पर से कवच निकाल देती है। इससे इसकी पैरनुमा रचनाएँ काँटे आदि सब निकल जाते हैं और शंखी (प्यूपा) का आकार दिखाई देने लगता है। शंखी भूरे-कत्थई रंग की होती है। शंखी का आगे का सिर तथा पंख वाला हिस्सा स्थिर रहता है लेकिन उदर वाला हिस्सा कशेरुकनुमा होता है जो धक्का लगते ही दाएँ-बाएँ मुड़ता है।

4-5 दिन तक सुस्त पड़ी रहने के बाद शंखी के ऊपरी भाग से ढक्कन की तरह एक खिड़की खुलती है और नवजात तितली निकलती है। कुछ देर तक सुस्त बैठे रहने के बाद यह अपने पंखों को ऊपर-नीचे हिलाती है। लगता है अब उड़ी कि तब उड़ी। अगले ही पल तितली फुर्र से उड़ जाती है। चकमक

फोटोः उमेश चौहान